परम्परागत कक्षा शिक्षण के तुल्य सामुदायिक रेडियो शिक्षण अधिगमकर्ता की रूचि व अभिप्रेरणा

श्योप्रकाश*

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में हमारे सभी प्रयत्नों का एक ही उद्देश्य होता है, बालक का सर्वांगीण विकास आज बदलते दौर में हम आपाधापी में बालक की इस आवश्यकता पर घ्यान नहीं दे पाते हैं। शिक्षा व्यवस्था में अनेक प्रकार के मार्गों का चयन हमारे समक्ष होता है पर परम्परागत तरीकों को अधिक अच्छा मानते हुए उन पर चलते हैं। नवीन साधनों का विकास हुआ है यदि उन पर कार्य करते हुए आगे बढा जाए तो बेहतर परिणामों की प्राप्ति हो सकती है। इसी बात का घ्यान रखते हुए अध्ययनकर्ता ने परम्परागत कक्षा शिक्षण के तुल्य सामुदायिक रेडियो से शिक्षा का अध्ययन करना सुनिश्चित करते हुए इस अध्ययन मे शामिल विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि व शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन के माध्यम से जानने हेतु यह अध्ययन किया। इस अध्ययन में छात्र – छात्राओं को न्यादर्श के यादृच्छिक समूहों को नियमित व प्रयोगात्मक समूह मे रखते हुए उनकी रूचि व अभिप्रेरणा स्तर को जाना गया है। कारण है कि अधिगम अन्य बातों के समान रहने पर भी रूचि व अभिप्रेरणा से प्रभावित होता है। अत. इस अध्ययन में इन्हें चर के रूप में शामिल किया जाना आवश्यक हो जाता है।

मुख्य शब्दः परम्परागत कक्षा शिक्षण, सामुदायिक रेडियो, कक्षा शिक्षण, रेडियो शिक्षण, रूचि व अभिप्रेरणा

प्रस्तावना

समस्त प्राणियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाने का श्रेय शिक्षा को दिया जाता है। किसी भी राष्ट्र के नागरिकों का विकास वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर है। शिक्षा व्यवस्था में चार महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक व पाठ्यक्रम। आज की शिक्षा व्यवस्था में हम कई रूपों में देखते है कि परम्परागत शिक्षण विधियों के साथ ही अभिभावक अपने बालक को रेल के इंजन की भाँति पटरी पर चढ़ाकर छोड़ देते हैं, उसकी रूचि व अभिप्रेरणा को जाने बिना ही उसका मुकाम तय कर दिया जाता है। प्रतियोगिता के इस युग में शिक्षा किस रूप में बालक को दी जाये, यह विचारणीय है। बालक अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पूर्व हतोत्साहित न हो इस हेतु उसे अभिप्रेरित किया जाना आवश्यक है, जो पटरी या रास्ता उसे तय करना है वह उसकी रूचि के क्षेत्र को जानकर निर्धारित किया जाना आवश्यक होना चाहिए। साक्षरता का लक्ष्य प्राप्ति हमारा एक लक्ष्य हो सकता है, साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में जिन परम्परागत तरीकों से पढाते हुए हम आगे बढ रहे हैं, वहाँ नवीन प्रयोग अपेक्षित है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनेक नवाचारों को शामिल किया जाता रहा है। उन सभी नवीन आव्यूहों का अपना–अपना महत्व हो सकता है। बालक नवीन मनोवैज्ञानिक विचारों को ग्रहण करते हुए कौशल को अधिगम स्तर तक प्राप्ति करते हैं। मानव जीवन की बेहतरी के लिए नवाचार आवश्यक है, इन्हीं से हम विकास की सीढ़ी पर आगे बढते हैं। वर्तमान सूचना व प्रौद्योगिकी के दौर में सूचना व संचार तकनीक का अत्यधिक महत्व है। तीव्र गति से संचार साधनों के विस्तार से दुनिया एक गाँव के रूप में विकसित हो रही है इन्हीं साधनों का उपयोग शिक्षा की बेहतरी के लिए किया जा सकता है। आज सूचनाओं के प्रसारण में बहुआयामी साधनों का उपयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। ई. लर्निंग व एम. लर्निंग की अवधारणाओं के बीच हम ऐसे साधन की बात करते हैं जो देखने में एकाएक पुराना लगेगा पर फ्रिक्वेंसी मॉड्यूलेशन तकनीक के विकास के बाद इसने समाज में पुनः अपना स्थान बनाया है। हम बात करते हैं सामुदायिक रेडियो की। सामुदायिक रेडियो एफ.एम. (फ्रिक्वेंसी माड्यूलेशन) तकनीक से हमारे सामने नये रूप में है। सी.आर.एस. अपने कार्यक्रमों में समुदाय की शैक्षिक विकासात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के मूल सिद्धान्तों को अपनाता है। वर्ल्ड समिट फॉर दा इन्फॉर्मेशन सोसायटी

*शोधार्थी (पीएच.डी.), महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

ट्यूनिश– 2005 में दुनिया के कई देशों ने सामुदायिक रेडियो व विशेष रूप से भारत में इसके महत्व विषय पर चर्चा की। तकनीक के नये साधनों के बीच भी इस पुराने साधन के साथ नवाचारों का प्रयोग भारत जैसे देश के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। सर्वसुलभ साधन सामुदायिक रेडियो का प्रयोग जन शिक्षा के साथ कक्षा–शिक्षण को उपयोगी बनाने में किया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र में स्थित कमलवाणी सामुदायिक रेडियो केन्द्र के माध्यम से शोधार्थी ने एक प्रयोगात्मक अध्ययन किया है इस अध्ययन में परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन देखना एक उद्देश्य है साथ ही छात्रों की शैक्षिक रूचि व छात्रों की शैक्षणिक अभिप्रेरणा का स्तर भी देखना है।

रूचि – हमारी इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा लक्ष्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने में हमारे ध्यान को आकृष्ट करने का कार्य रूचि द्वारा होता है। व्यवहार का संचालन भी आंतरिक रूचि द्वारा तय होता है। यही कारण है कि कोई वस्तु हमें अच्छी लगती है तो कोई नहीं। बालकों में अधिगम के लिए रूचियाँ अभिप्रेरक का कार्य करती है। यह सीखने–सिखाने की क्रिया को संचालित करने वाली प्रमुख शक्ति है।यह एक अभिप्रेरक शक्ति है। जो हमारे ज्ञानात्मक, क्रियात्मक या भावात्मक व्यवहार को अग्रेषित करती है।

रॉस के अनुसार – "जो वस्तु हमसे संबंधित होती है या प्रयोजन रखती है, हमारी रूचि उसी में होती है।"

रूचि अपने समानान्तर शब्दों, इच्छा, अभिवृति, भावना आदि से भिन्न है। इच्छा में किसी वस्तु का अभाव अनुभव होता है, उसे प्राप्ति की चेष्टा रहती है जबकि रूचि का संबंध ध्यान केन्द्रित अनुभूति है। अभिवृति व अभिरूचि में गहरा संबंध है। अभिवृति नकारात्मक व सकारात्मक दोनों दिशाओं में विचार को ले जाती है। रूचि धनात्मक दिशा में विचार इंगित करती है। भावना में सुख व दुःख दोनों प्रकार की अनुभूति रहती है। रूचि सुखी अनुभूति की ओर ध्यान केन्द्रित करती है।

रूचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके दृष्टिकोण, प्रवृति तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं के निर्माण में भी सहायता पहुँचाती है। किसी भी प्रक्रिया को सीखने के लिए उसमें रूचि होना अनिवार्य है। जब हमें किसी वस्तु में रूचि होती है तब हम उसका निरीक्षण और अवलोकन करते हैं। इससे हमें संतोष व सुख मिलता है तथा हम उस कार्य को करने के लिए तैयार होते है। इसी से हमारे लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

रूचियों का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक है, वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव भी इस पर पड़ता है। बच्चों में रूचि उत्पन्न करने में अधिगम स्थितियाँ व वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान रहता है इसलिए अध्यापकों को उचित वातावरण निर्माण पर ध्यान देना चाहिए।

अभिप्रेरणा– अभिप्ररेणा व्यक्ति के व्यवहार को तीव्र बनाती है वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिक उत्साह के साथ क्रियाशील हो जाता है। रूचि व्यक्ति का ध्यान धनात्मक दिशा की ओर केन्द्रित करती है। वहीं अभिप्रेरणा वह कारण है, जो भीतर से व्यक्ति को उस क्रिया को प्रारम्भ करने एवं उसे जारी करने की ओर प्रवृत करता है। यही कारण है कि रूचि द्वारा जो कार्य व्यक्ति को पसंद है उसे क्रिया रूप प्रदान करने का कार्य अभिप्रेरणा द्वारा होता है। फ्रैंडसन के अनुसार ''प्रभावी तरीके से सीखना प्रभाव पूर्ण अभिप्रेरणा पर निर्भर है।

अधिगम की दृष्टि से अभिप्रेरणा का अत्यधिक महत्व है। अभिप्रेरणा के बारे में भिन्न–भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने मत अभिव्यक्त किये हैं। लेकिन सीखने की क्रिया के साथ इसका सकारात्मक संबंध सभी ने माना है यह आरम्भ से लेकर अंत तक मानव व्यवहार के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती है। शिक्षा का प्रमुख कार्य शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बालक के बाधित व्यवहार का विकास उचित शैक्षिक क्रिया द्वारा करना है। अतः अध्यापक को अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उचित क्रिया को अपनाया जाना आवश्यक है छात्रों की आवश्यकताओं का ज्ञान होना कक्षा की परिस्थितियाँ तथा वातावरण आदि कारक मिलकर उचित अभिप्रेरणा का मार्गदर्शन करते है। छात्रों की आवश्यकताओं को समझने के बाद ही अध्यापक उचित मार्गदर्शन द्वारा बालक के विचार संवेग या व्यवहार को निश्चित दिशा में मोड़ सकता है। अतः अभिप्रेरणा द्वारा बालक का शैक्षणिक मार्गदर्शन किया

जा सकता है। अभिप्रेरणा का वर्गीकरण अलग–अलग विद्वान अलग–अलग तरीके से करते हैं।

उपलब्धि अभिप्रेरणा :– उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह वृति है जो सफलता प्राप्ति से संबंधित है। जिन लोगों में यह अभिप्रेरणा पाई जाती है, वे ऐसे कार्य करना पसंद करते हैं जिससे उनकी प्रसंशा हो। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के कारण बालक चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए तैयार होते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा बालक के शैक्षणिक वातावरण व उसकी सीखने की इच्छा से संबंधित है। इसका ज्ञान होना अध्यापक के लिए आवश्यक है।

अभिरूचि व अभिप्रेरणा के महत्व को देखते हुए अध्ययन में इसके प्रभावों को जानना जरूरी हो जाता है इसी को ध्यान में रखते हुए इन्हें मध्यस्थ चर के रूप में शोधार्थी ने अध्ययन में शामिल किया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा जगत में किये जा रहे नवीन प्रयोगों का हमेशा यही प्रयास रहता है कि नवाचारों का उपयोग मानव विकास के लिए लाभाकारी हो सके। इन्हीं लाभकारी उपायों का अपनाते हुए हम बालक के सम्पूर्ण विकास की रूपरेखा तैयार करते हैं। बालक शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग होता है। नवाचारों से वह निश्चित ही प्रभावित होता है। आज के युग में हम बालक की रूचि व उसके अभिप्रेरणा स्तर को जाने बिना उसके लिए लक्ष्यों का निर्धारण करें, यह उचित नहीं कहा जा सकता। जागरूकता की कमी के कारण कई बार अभिभावक बालक को बनी बनाई परम्परा या पटरी पर चला देते हैं। जो उसके जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधक बन सकती है। अतः अभिभावक एवं शिक्षकों को चाहिए कि शिक्षा देने के शुरूआती समय में ही बालक की शैक्षिक रूचि तथा शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर जान लिया जाए ताकि बालकों को उचित मार्गदर्शन मिल सके। कुछ शैक्षणिक संस्थान इस दिशा में कार्य कर भी रहे हैं। लेकिन सभी का ध्यान इस ओर जाना चाहिए। यह आज की शिक्षा व्यवस्था मे अनिवार्य होना चाहिए। रूचि व अभिप्रेरणा बालक के अधिगम को भी प्रभावित करती है, साथ ही परम्परागत तरीके से अनुदेशन देने के स्थान पर नवीन तकनीकी साधनों को प्रयुक्त किया जाये तो बेहतर परिणाम हो सकते हैं। रेडियो का नया रूप सामुदायिक रेडियो हमारे सामने है। ट्यूनिश मे 2005 में विश्वस्तरीय सम्मेलन में इसके प्रभावों की व्याख्या की गई तथा भारत सरकार ने नए सामुदायिक रेडियो को लाइसेंस देने की नीति का 2002 मे जब अनुमोदन किया तब इसे गैर लाभकारी संस्थानों व शिक्षण संस्थानों ने अपने–अपने स्तर पर स्थापित किया। शिक्षा के क्षैत्र में इसकी उपयोगिता ध्यान में रखते हुए इसकी वर्तमान प्रासंगिकता शोध का विषय है। अतः शोधार्थी ने परम्परागत कक्षा शिक्षण के तुल्य सामुदायिक रेडियो शिक्षण अधिगमकर्ता की रूचि व अभिप्रेरणा को जानना आवश्यक समझते हुए इसे अपने अध्ययन में शामिल किया। यह अध्ययन महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने वाला भी है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

नागपाल, गुलशन कुमार (2001) ने 'माध्यमिक स्तर पर गणित विशय के छात्र–छात्राओं की रूचि का अध्ययन' विषय पर उदयपुर विश्वविद्यालय से अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों में पाया कि इस स्तर पर बालकों की रूचियाँ परिवर्तनशील होती है। न्यादर्श से 40 प्रतिशत छात्र विज्ञान विषय में रूचि दर्शाते हैं। व्यवसाय के रूप मे अभियांत्रिकी में अधिक रूचि प्रदर्शित की गई तथा व्यावसायिक रूचि एवं बुद्धि में कोई संबंध नहीं पाया। डिंग, जिंगफू (2002) ने वेब आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन किया उनके अध्ययन के अनुसार वेब आधारित शिक्षा वर्तमान समय मे इतनी रूचिकर एवं प्रभावशाली हो गई है कि आने वाले समय मे अगर परम्परागत व प्रत्यक्ष शिक्षण का स्थान वेब आधारित शिक्षण ले ले तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सरफराज अहमद (2006) ने 'विदेशी उपग्रह चैनल के कार्यक्रमों के प्रभावों के प्रति शिक्षकों एवं छात्रों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया कि शिक्षकों ने अपने विचारों मे मनोरंजन की दृष्टि से चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों को मनोरंजन माना परन्तु कार्यक्रमों की अशुद्ध भाषा व अधिक खुलेपन पर चिन्ता जताई।

सेबुकन, आर.एवं राय, नाथ, के. (2015) ने

'पांडिच्चेरी में ग्रामीण लोगों हेतु शैक्षणिक कार्यक्रमों की जानकारी के स्रोत के रूप में सामुदायिक रेडियो का मूल्यांकन' पर एक अध्ययन किया। पुड्डुवाणी सामुदायिक रेडियो से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का जनता पर प्रभाव जानना अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य था। सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों के निष्कर्ष मे पाया कि सामुदायिक रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों से लोग जिनमें महिलाएँ एवं विद्यार्थी शामिल थे, वे सकारात्मक रूप में प्रभावित होते हैं। कार्यक्रमों मे मनोरंजन, स्वास्थ्य, सामाजिक सद्भावना, सशक्तिकरण एवं जागरूकता के साथ ही शिक्षा संबंधी रूचिकर कार्यक्रम थे।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से प्राप्त सारांश से अध्ययनकर्ता ने पाया कि तकनीकी का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र मे हो रहा है तथा इस संदर्भ मे अभी पर्याप्त शोध होना है। परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना मे सामुदायिक रेडियो से शिक्षण नवीन व मौलिक अध्ययन विशय है। अतः इस क्षेत्र शोध किया जाना चाहिए इसलिए शोधार्थी ने उचित विशय का चयन कर अध्ययन करना सुनिश्चित किया ।

समस्या कथन

''परम्परागत कक्षा शिक्षण एवं सामुदायिक रेडियो से शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

सीखने की क्रिया में अभिरूचि व अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए किसी भी शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बालक की अभिरूचि एवं अभिप्रेरणा के स्तर को जानना अध्यापक के लिए आवश्यक हो जाता है। विद्यार्थियो की उपलब्धि पर भी इनका प्रभाव पड़ता है इसी को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य रखे गए।

1. परम्परागत रूप में कक्षा शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि के स्तर को जानना।
2. परम्परागत रूप से कक्षा शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिप्रेरणा के स्तर को जानना।
3. कमलवाणी सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि को जानना।
4. कमलवाणी सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिप्रेरणा के स्तर को जानना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थी अधिक शैक्षिक रूचि रखते हैं।
2. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक होती है।

अध्ययन के चर

'शैक्षिक रूचि' बालक या विद्यार्थी के विषय के प्रति लगाव या पंसद को अभिव्यक्त करती है एक मध्यस्थ चर है। 'शैक्षणिक' उपलब्धि अभिप्रेरणा – जो बालक के व्यवहार को निश्चित दिशा में प्रेरित करती है एक मध्यस्थ चर है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का उपयोग किया गया है। इसमें दो समूह प्रथम नियंत्रित समूह, दूसरा प्रयोगात्मक समूह सम्मिलित है। प्रथम को सामान्य शिक्षण विधि से, दूसरे को सामुदायिक रेडियो पाठों से अध्यापन करवाया जाता है तथा अध्ययन में सम्मिलित समूहों की 'रूचि' व 'अभिप्रेरणा की तुलना की गयी।

अध्ययन न्यादर्श

अध्ययन में कमलवाणी सामुदायिक रेडियो की प्रसारण सीमा में आने वाले विद्यालयों के कक्षा 7 के स्तर के 160 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

न्यादर्श तालिका

क्र.स.	समूह	छात्र	छात्रा	क्ल
1.	नियंत्रित समूह	40	40	80
2.	प्रयोगात्मक समूह	40	40	80
	कुल न्यादर्श			160

अध्ययन का परिसीमन– यह अध्ययन कमलवाणी रेडियो केन्द्र की प्रसारण सीमा तक सीमित रखा गया है।

इसमें कक्षा 7 के विद्यार्थी सम्मिलित किये गए हैं। यह अध्ययन केवल उच्च प्राथमिक स्तर के 160 विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण– यह अध्ययन में प्रामाणिक उपकरण के रुप में शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण व शैक्षिक रूचि प्रपत्र प्रयुक्त किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी– अध्ययन से प्राप्त प्रदतों को निम्न सांख्यिकी प्रविधियों से विश्लेषित करते हुए परिणामों की प्राप्ति मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी. मान से की है।

परीक्षण परिणामों की सारणी

परीक्षण वर्ग	शैक्षिक रूचि		शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा	
समूह	नियेगित समूह	प्रयोगात्मक	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह
न्यादर्श	80	80	80	80
मध्यमान	5.05	5.9	21.25	24.75
प्रमाप विचलन	.75	.81	1.67	1.89
टी.मान		6.53	12.5	
साथकता स्तर	सार्थक/0.01 स्तर पर		सार्थक/0.01 स्तर पर	

परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या

शैक्षिक रूचि के अनुसार नियंत्रित समूह की शैक्षिक रूचि का मध्यमान 5.05 तथा प्रमाप विचलन .75 प्राप्त हुआ। प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 5.9 तथा प्रमाप विचलन 0.81 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के अन्तर की सार्थकता पुष्टि के लिए टी. परीक्षण किया गया। टी. मान 6.53 प्राप्त हुआ। जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह प्रयोगाात्मक समूह की अधिक शैक्षिक रूचि दर्शाता है। शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण मे नियंत्रित समूह का मध्यमान 21.25 तथा प्रमाप विचलन 1.67 प्राप्त हुआ। प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 24.75 तथा प्रमाप विचलन 1.89 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के अन्तर की सार्थकता पुष्टि के लिए टी. परीक्षण किया गया। टी. मान 12.5 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक पाया गया। यह प्रयोगाात्मक समूह की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होने की पुष्टि करता है।

शोध परिणाम एवं निष्कर्ष

परीक्षण से प्राप्त परिणामों व परिकल्पनाओं की जाँच से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि अधिक होती है।
2. परम्परागत कक्षा शिक्षण की तुलना में सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक होती है।

अध्ययन परिमाणों की व्याख्या विश्लेषण से तकनीक का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। अतः परम्परागत कक्षा शिक्षण के तुल्य सामुदायिक रेडियो से शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि व शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भार्गव, एम. (2015). 'आधुनिक मनौवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन', आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस।

भाटिया, एच.आर (1968). 'इलेमेंटस् ऑफ एजुकेशन साइकोलॉजी,' कलकताः ओरियंट लोंगमेन (थर्ड एडीसन)।

झा, बी. एन (1946). 'मॉडर्न एजुकेशन साइकोलोजी', इलाहाबाद, इंडियन प्रेस लिमिटेड।

गिलफॉर्ड, जे.पी.(1965). 'फंडामेंटल स्टैट्स्टिक इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन,' मेक्ग्रोहिल बुक कंपनी।

हेरिस, सी.डब्ल्यू (1960). 'इनसाइकलोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च', न्यूयॉर्कः मेकमिलन कंपनी।

हेक्सन, एच. (1967). 'द एनाटॉमी ऑफ अचीवमेंट मोटीवेशन', न्यूयॉर्कः एकेडमिक प्रेस।

गोयल, डी. आर. (2000). 'एजुकेशन मीडिया इन इंडिया' न्यू दिल्लीः भारतीय कला प्रकाशन।

बंसल, एस. के. (2002). 'फंडामेंटल ऑफ इनफोर्मेशन टेक्नोलॉजी, न्यू दिल्लीः ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।

पांडे, चंद्रभूषण (1995). 'सामुदायिक शोध का विधिक संसार', आगराः के. बी. प्रकाशन।

htpp:// Community Radio . in/>